श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 18, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज सोमवार, 24 अगस्त, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

फिंगर इलाका छोड़ने को तैयार नहीं है ड्रैगन

चोरी और सीनाजोरी की नीति पर उतरा चीन

नई दिल्ली, एजेंसी। चोरी और सीनाजोरी। पूर्वी लद्दाख में चीन अब इसी नीति पर उतर आया है। एलएसी (वास्तविक नियंत्रण रेखा) लांघकर भारतीय जमीन पर आ बैठा चीन वार्ता में भारत की इलाका खाली कर पीछे हटने की मांग पर कह रहा है कि दोनों देशों की सेनाएं समान दूरी तक पीछे हटें। अर्थात, भारत अपनी जमीन छोड़कर और पीछे जाए, तब चीन उतनी ही दूरी पीछे हटेगा। मतलब साफ है कि चीन अपनी घुसपैठ को स्वीकार नहीं कर रहा। जहां वह है - वहां तक अपनी जमीन मान रहा है। बीते तीन महीने में दोनों देशों के बीच दर्जन भर बार कूटनीतिक और सैन्य वार्ताएं हो चुकी हैं। भारत के लिहाज से नतीजा संतोषजनक नहीं रहा है। इसके बाद सैन्य कमांडरों ने एलएसी पर मौजूद कमांडिंग अफसरों से किसी भी स्थिति के लिए पूरी तरह से तैयार रहने के लिए कह दिया है। वैसे भारतीय सेना और वायुसेना ने मौके पर अपनी व्यवस्थाओं को चाक-चौबंद कर लिया है।

फिंगर-5 पर भारी साजो-सामान के साथ मौजूद है चीनी सैनिक

सरकारी सूत्रों के अनुसार वार्ता में चीन फिंगर-4 इलाके से दोनों सेनाओं की बराबर से वापसी की शर्त पर अड़ा हुआ है। भारत को उसकी यह शर्त मंजूर नहीं है। इस समय चीनी सेना पैंगोंग सो लेक इलाके में फिंगर-5 पर भारी साजो-सामान के साथ मौजूद है। यहां पर उसका विस्तार फिंगर-8 तक की पांच किलोमीटर लंबी पट्टी पर है। चीन ने लंबे समय तक इस इलाके में रकने की नीयत से बड़े पैमाने पर स्थायी निर्माण भी कर लिया है।

बातचीत में भारत ने साफ कर दिया है कि चीन को फिंगर एरिया खाली करना होगा और अप्रैल वाली अपनी मूल स्थिति पर लौटना होगा। दक्षिण सागर में चीन का सैन्य अभ्यास भारत और ताइवान के साथ चल रहे तनाव के बीच चीन दक्षिण चीन सागर में सैन्य अभ्यास करने जा रहा है। उसका यह अभ्यास 24 से 29 अगस्त तक होगा। चीन इस समुद्री इलाके को अपना बताता है और वहां पर उसने कई कृत्रिम द्वीप बनाकर उन पर सैन्य तैनाती भी कर दी है।

अबु यूसुफ के घर से भारी मात्रा में विस्फोटक व जैकेट बरामद

बलरामपुर, जेएनएन। नई दिल्ली में धौलाकुआं में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के साथ मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार इस्लामिक स्टेट्स ऑफ सीरिया एंड इराक (आइएसआइएस) ऑपरेटिव अबु यूसुफ उर्फ मुस्तकीम के साथियों की तलाश के साथ ही उसके अड्डों को खंगालने में दिल्ली पुलिस तथा यूपी एटीएस को भी बड़ी सफलता मिली है। दिल्ली पुलिस की गिरफ्त में आने के बाद वह अब्दुल युसुफ बताकर सबको गुमराह करता रहा था। बाद में पता चला कि उसका असली नाम मुस्तकीम है और बढ़या गांव में रहने वाले कफील खान का बेटा है। बलरामपुर के उतरौला में उसके गांव में तलाशी के दौरान पुलिस को बड़ी मात्रा में विस्फोटक के साथ फिदायीन हमले के लिए तैयार की गई जैकेट भी मिली है। दिल्ली से शनिवार को गिरफ्तार आइएसआइएस ऑपरेटिव अबु यूसुफ के घर बलरामपुर उतरौला तहसील के बढ़िया भैसाही गांव में दिल्ली पुलिस के साथ उत्तर प्रदेश एटीएस ने पड़ताल के दौरान भारी मात्रा में विस्फोटक और कथित तौर पर फिदायीन हमले के लिए तैयार किया गया जैकेट बरामद किया गया है। अपर पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार मिश्र ने बताया कि आतंकी अबू यूसुफ व मुस्तकीम दोनों एक ही हैं। आतंकी की निशानदेही पर घर के पास के एक तालाब से मानव बम में प्रयुक्त होने वाले दो जैकेट बरामद किए गए हैं। इसके साथ ही घर से विस्फोटक व आपत्तिजनक साहित्य मिला है। यूपी एटीएस व दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर उसके संपर्क में आए लोगों की धरपकड़ शुरू कर दी गई है। मुस्तकीम की निशानदेही पर उतरौला नगर के हाटन व मनकापुर मार्ग पर दो साइकिल दुकानदारों से पूछताछ की गई।

मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री भी हुए कोरोना संक्रमित

भोपाल, एएनआइ। मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री प्रभुराम चौधरी भी कोरोना से संक्रमित हो गए हैं। इसकी जानकारी उन्होंने खुद ट्विटर के माध्यम से दी है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि मेरी कोरोना की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। मेरा सभी से निवेदन है जो भी मेरे संपर्क में आए हैं। वह कोरोना टेस्ट करवा लें। मेरे निकट संपर्क वाले लोग क्वारनटीन में चले जाएं। आप सभी की प्रार्थना एवं आशीर्वाद से जल्द आप सभी के बीच उपस्थित होकर फिर जन सेवा के कार्यों में लगेंगे। पिछले दिनों ही मध्य प्रदेश सरकार के एक और मंत्री गोपाल भार्गव भी संक्रमित हो गए थे। वो अभी अस्पताल में भर्ती हैं और उनका इलाज चल रहा है।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी कोरोना संक्रमित हो गए थे। वहीं, उनकी सरकार में कई मंत्री कोरोना की चपेट में आ चुके हैं। जिसमें मंत्री अरविंद भदौरिया, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा, महामंत्री संगठन सुहास भगत समेत अन्य कई नेता कोरोना संक्रिमत हो चुके हैं। वहीं, अब सभी उपचार के बाद स्वस्थ हैं और अपनी राजनीतिक गतिविधियों में लग गए हैं।

देश में कोरोना का संक्रमण तेजी से बढ़ता जा रहा है। देश के गृह मंत्री अमित शाह तक कोरोना संक्रमित हो चुके हैं। वहीं, रोजाना कोरोना के नए मामलों की संख्या 70 हजार के करीब है। इस बीच, प्रदेश में रविवार को 1,263 नए कोरोना मरीज मिले। अब कुल संक्रमित 53 हजार से ज्यादा हो गए हैं। वहीं 23 और मौतों के साथ कुल मृतक संख्या 1,229 हो गई। हालांकि 991 मरीज स्वस्थ होने से डिस्चार्ज किए गए, इसलिए कुल सक्रिय मरीजों की संख्या रविवार को 249 बढ़कर 11,510 रही।

स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार देश में अब तक कोरोना के 30 लाख 44 हजार 941 मामले सामने आ गए हैं। एक्टिव केस सात लाख सात हजार 668 हो गए हैं। 22 लाख 80 हजार 706 मरीज ठीक हो गए हैं और 56 हजार 706 लोगों की मौत हो गई है। देश में तीन करोड़ 52 लाख 92 हजार 220 सैंपल टेस्ट हो गए हैं। रिकवरी रेट 74.90 फीसद और डेथ रेट 1.86 फीसद है।

निर्वाचन आयोग ने कहा- कोरोना महामारी के बावजूद समय पर होंगे बिहार विधानसभा चुनाव

नई दिल्ली, प्रेट्र। कोविड-19 महामारी के बावजूद इस साल प्रस्तावित बिहार विधानसभा चुनाव समय पर होंगे। निर्वाचन आयोग के उच्च पदस्थ सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी। उल्लेखनीय है कि कुछ राजनीतिक दल महामारी के चलते चुनाव स्थगित करने की मांग कर रहे हैं। 243 सदस्यों वाली बिहार विधानसभा का कार्यकाल 29 नवंबर तक है। इस बात का संकेत है कि विधानसभा चुनाव अक्टूबर-नवंबर में किसी समय कराया जा सकता है। निर्वाचन आयोग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि बिहार में चुनाव निश्चित रूप से समय पर होगा। राज्य की मुख्य विपक्षी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल ने महामारी के दौर में चुनाव कराने पर सवाल उठाया है। सत्तारूढ़ राजग में शामिल लोक जनशक्ति पार्टी ने भी निर्वाचन आयोग से महामारी को देखते हुए चुनाव स्थगित करने की मांग की है।

मध्यप्रदेश में एक ही परिवार के पांच लोगों की संदिग्ध मौत

टीकमगढ़, प्रेट्र। मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ में एक ही परिवार के पांच लोग फंदे से लटके मिले। यहां एक परिवार के पांच लोगों ने रविवार को खुद को फांसी लगा ली। मृतकों में एक 4 चार साल का बच्चा भी शामिल है। पुलिस इस घटना के पीछे की वजह तलाशने में लगी है।

मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले के खरगापुर थाना इलाके के वार्ड नंबर आठ में रहने वाले मनोहर सोनी और उनकी पत्नी सहित परिवार के पांच सदस्यों के शव घर में फांसी के फंदे पर झूलते हुए मिले। एक साथ पांच लोगों की मौत से इलाके में सनसनी फैल गई है। घटना की सूचना मिलने पर कलेक्टर सुभाष द्विवेदी और एसपी प्रशांत खरे मौके पर पहुंचे। पुलिस के मुताबिक आत्महत्या के कारणों का अभी पता नहीं लग पाया है। पांचों सदस्यों की हत्या और आत्महत्या को लेकर भी अभी स्थिति साफ नहीं हैं। पुलिस मामले की पड़ताल में जुटी हुई है। जानकारी के अनुसार 62 साल के धर्मदास सोनी, उनकी 55 साल की पत्नी पूना सोनी, 27 साल का बेटा मनोहर सोनी, 25 साल की बहू सोनम सोनी और चार साल की पोती सानिध्य सोनी के शव फंदे पर लटकते हुए मिले।

पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक, सरकारी नौकरी से रिटायर एक शख्स, उसकी पत्नी और परिवार के तीन अन्य सदस्यों ने खुद को फांसी लगा ली। पड़ोसी द्वारा सूचना देने पर पुलिस मौके पर पहुंची और आगे की कार्रवाई और जांच शुरू की। डिस्ट्रिक्ट पुलिस सुपरिंटेंडेंड प्रशांत खरे ने बताया कि जब पड़ोसियों को सुबह से ही घर का कोई भी सदस्य बाहर नजर नहीं आया तो उन्होंने हमें इसकी सूचना दी जिसके बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। यहां पहुंचने के बाद पुलिस दरवाजे तोड़कर घर के अंदर घुसी जहां पांच लोग फंदे से लटके मिले।

बता दें कि दो साल पहले एक जुलाई 2018 को दिल्ली में सामूहिक हत्याकांड का ऐसा ही मामला देखने को मिला था, जिसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। 1 जलाई की सुबह चुड़ावत परिवार के 11 सदस्य घर में मृत पाए गए थे, जिसमें परिवार के बच्चे भी शामिल थे। सुबह के समय जब एक पड़ोसी इनके घर पहुंचा तो उसे यहां सभी लोग मृत हालत में मिले। मामले की जांच में पुलिस ने कई चौंकाने वाले खुलासे किए।

पांच महीने में एक करोड़ 78 लाख ट्रेन टिकट हुए रद

नई दिल्ली, प्रेट्र। दुनियाभर में कोरोना महामारी के कारण लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है। इस बीच रेल सफर से जुड़ी एक खबर आ रही है। कोरोना वायरस महामारी के कारण रेलवे ने इस साल मार्च से लेकर अब तक 1 करोड़ 78 लाख से अधिक टिकट रद किए हैं। इस दौरान रेलवे ने 2,727 करोड़ रुपये की राशि वापस की है। ये जानकारी रेलवे की ओर से एक आरटीआई के जवाब में दी गई है। आरटीआई में पाया गया है कि रेलवे जिसने 25 मार्च से अपनी यात्री ट्रेन सेवाओं को निलंबित कर दिया था, उसने पांच माह की अवधि के दौरान 1 करोड़ 78 लाख 70 लाख 644 टिकट रद किए।

पीटीआई ने पहले बताया है कि संभवतः पहली बार रेलवे ने टिकट बुकिंग से जितना कमाया है उससे अधिक वापस कर दिया है। इस कारण रेलवे ने कोरोना महामारी के कारण 2020-21 की पहली तिमाही में 1,066 करोड़ रुपये का नकारात्मक यात्री खंड राजस्व दर्ज किया है। वहीं पिछले साल की बात करें तो रेलवे ने 1 अप्रैल से 11 अगस्त की अवधि में 3,660.08 करोड़ रुपये रिफंड किए थे। इस दौरान रेलने ने 17,309.1 करोड़ रुपये भी कमाए। रेलवे के इतिहास में यह पहला मौका है, जब टिकट रिफंड की गई राशि, कमाई हुई राशि से ज्यादा है।पश्चिम रेलवे को कुल 2,255 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ। इसमें उपनगरीय खंड को 339 करोड़ जबकि गैर-उपनगरीय रेलवे को 1,916 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ।

एक अधिकारी ने बताया कि रेल सेवाओं के निलंबन के कारण अप्रैल, मई और जून में यात्रा के लिए बुक किए गए टिकटों को रिफंड की पेशकश की गई थी, जबकि इन तीन महीनों के दौरान कम टिकट बुक किए गए थे। इस वित्तीय वर्ष के पहले तीन महीने जब रेलवे को अपनी सभी नियमित यात्री सेवाओं को निलंबित करना पड़ा उस दौरान राष्ट्रीय रेलवे का राजस्व नकारात्मक था। अप्रैल में 531.12 करोड़ रुपये, मई में 145.24 करोड़ रुपये और जून में 390.6 रुपये (सभी नकारात्मक में)। पिछले वित्त वर्ष में इसने अप्रैल में 4,345 करोड़ रुपये, मई में 4,463 करोड़ रुपये और जून में 4,589 करोड़ रुपये कमाए थे। फिलहाल रेलवे ने अपनी सभी नियमित यात्री सेवाओं को अनिश्चित काल के लिए रद कर दिया है।

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की तबीयत में नहीं कोई सुधार

नई दिल्ली, एएनआइ। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की चिकित्सा स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। आर्मी रिसर्च एंड रेफरल (आर एंड आर) अस्पताल के अनुसार रविवार को भी वह कोमा में और वेंटिलेटर समर्थन पर बने हुए हैं। अस्पताल के अपडेट में कहा गया है कि आज सुबह प्रणब मुखर्जी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया है। वह अब भी कोमा में हैं और वेंटिलेटर सपोर्ट पर हैं। उन्होंने आगे कहा कि उनके महत्वपूर्ण मापदंड स्थिर हैं। जानकारी के लिए बता दें कि 10 अगस्त को सेना अस्पताल (आर एंड आर) में ब्रेन में क्लॉट के लिए सर्जरी की गई। इस दौरान उनका कोरोना वायरस जांच भी की गई जिसकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई है(इससे पहले शुक्रवार को आर्मी रिसर्च एंड रेफरल अस्पताल द्वारा जारी किए गए बयान में कहा गया है कि मुखर्जी की चिकित्सा स्थिति गंभीर बनी हुई है। हाल ही में उन्हें फेफड़ों का संक्रमण हो गया था। इसके बाद से उनका संक्रमण का इलाज किया जा रहा है। शनिवार को भी उनके अहम और क्लिनिकल पैरामीटर स्थिर बने हुए थे यानी वे हेमोडायनामिक रूप से स्थिर हैं। बात करें गुरुवार की तो अस्पताल ने जानकारी दी थी कि प्रणब मुखर्जी की तबीयत में थोड़ा सुधार हुआ है। डॉक्टरों ने साथ ही उनके श्वसन मापदंडों में मामूली सुधार की सूचना दी थी। उनके बेटे ने भी तब ट्वीट करके सूचना दी थी कि मुखर्जी की तबीत में थोड़ा सुधार हुआ है। साथ हीलोगों ने उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए कामने करने के लिए कहा था।

दिल्ली में आतंकी के पकड़े जाने पर अलर्ट हुई गोरखपुर पुलिस

गोरखपुर, जेएनएन। दिल्ली में आइएसआइएस आतंकी पकड़े जाने के बाद जिले की पुलिस अलर्ट पर है। रविवार को एसपी सिटी व सीओ कैंट ने एलआइयू, बम व डॉग स्कवाड के साथ शहर में चेकिंग की। गोरखनाथ मंदिर, रेलवे स्टेशन व बस अड्डा पर सघन तलाशी हुई। देर रात तक पुलिस का अभियान चला। देश की राजधानी को दहलाने की साजिश रचने वाला आतंकी बलरामपुर जिले का रहने वाला है। एक साल से वह देश विरोधी गतिविधि में लिप्त होने के साथ ही कई लोगों के संपर्क में था। पूछताछ में यह जानकारी सामने आने के बाद डीजीपी हितेश चंद्र अवस्थी व एडीजी कानून- व्यवस्था ने अलर्ट जारी किया है। सभी जिलों के पुलिस कप्तान व सुरक्षा एजेंसियों को हाई अलर्ट पर रहने का निर्देश दिए गए हैं। इसी क्रम में रविवार को शहर में चेकिंग हुई। सभी होटल व लॉज में पहुंचकर पुलिस ने बाहर से आए लोगों की जानकारी एकत्र की। संचालक से कहा कि बिना पहचान पत्र के किसी को कमरा न दे। किसी संदिग्ध के आने पर स्थानीय थानेदार व चौकी प्रभारी को बताएं। एसएसपी जोगेंद्र कुमार ने बताया कि पुलिस पहले से ही अलर्ट पर है। सतर्कता परखने के लिए लिए गोरखनाथ मंदिर के साथ ही स्टेशन, होटल व लॉज में चेकिंग की गई।

सरकार ने कहा- देरी से बिजली बिल भरने पर सरचार्ज 12% रखें

नई दिल्ली, प्रेट्र। बिजली मंत्रालय ने बिजली उत्पादन और ट्रांसमिशन कंपनियों से कहा है कि वे वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) की तरफ से देर से भुगतान करने पर 12 प्रतिशत से अधिक विलंब शुल्क सरचार्ज नहीं लें। कोविड-19 महामारी के चलते इस क्षेत्र पर दबाव को देखते हुए बिजली मंत्रालय ने कंपनियों को यह सलाह दी है। इस समय विलंब शुल्क के कई मामलों में सरचार्ज की दर 18 फीसद सालाना है। इससे लॉकडाउन के दौरान डिस्कॉम पर बुरा असर पड़ा है।

बिजली मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि इस कदम का मकसद डिस्कॉम पर वित्तीय बोझ घटाना है, जिससे उपभोक्ताओं को भी लाभ होगा। मंत्रालय ने कहा कि सभी उत्पादन और ट्रांसमिशन कंपनियों को सलाह दी गई है कि भुगतान विलंब की स्थिति में आत्मनिर्भर भारत के तहत पीएफसी और आरईसी की लिक्विडिटी इनफ्यूजन स्कीम (एलपीएस) के तहत सभी भुगतान पर 12 प्रतिशत सालाना (साधारण ब्याज) से अधिक सरचार्ज नहीं लिया जाए।

आमतौर पर एलपीएस की दर काफी अधिक होती है, जबकि पिछले कुछ वर्षो के दौरान ब्याज दरें काफी कम हुई हैं। कोरोना वायरस महामारी के चलते डिस्कॉम की नकदी स्थिति पर विपरीत असर पड़ा है। हालांकि, सरकार ने उन्हें राहत देने के कई उपाए किए हैं।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिग के माध्यम से जिले के छह पावर सब स्टेशन का उद्घाटन व दो का कार्यारंभ किया। वहीं जिले की ऊर्जा प्रक्षेत्र में 52.33 करोड़ की विभिन्न योजनाओं का उद्घाटन, लोकार्पण, शिलान्यास एवं कार्यारंभ किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज बिहार में बिजली की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। हर घर तक बिजली पहुंचाने का काम दिसंबर 2018 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था जिसे अक्टूबर 2018 में ही पूरा कर लिया गया। समाहरणालय के वीसी कक्ष में डीएम शीर्षत कपिल अशोक, डीडीसी अखिलेश कुमार सिंह समेत अन्य अधिकारी मौजूद थे।

भारत में 2020 खत्म होने से पहले आ जाएगी कोरोना की पहली वैक्सीन

नई दिल्ली, एजेंसियां। भारत समेत पूरी दुनिया में कोरोना वायरस महामारी का कहर तेजी से बढ़ रहा है। भारत में प्रतिदिन अब करीब 70 हजार तक मामले सामने आने लगे हैं। इस बीच भारत में लोगों को कोरोना वैक्सीन को लेकर काफी उम्मीदें हैं। रूस ने दुनिया की पहली कोरोना वैक्सीन बना ली है लेकिन आखिर भारत में पहली कोरोना वैक्सीन कब तक आ सकती है।

इसको लेकर देश के स्वास्थ्य मंत्री ने बड़ी जानकारी दी है। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा है कि अगर सब कुछ ठीक रहा तो देश की पहली कोरोना वैक्सीन इस साल के अंत तक आ जाएगी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा है कि कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में भारत का पहली वैक्सीन इस साल के अंत तक उपलब्ध हो सकती है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने बताया कि देश में कोरोना वायरस का पहला मामला 7 जनवरी,2020 को सामने आया था और अगले ही दिन हमने कोरोना वायरस के खिलाफ नीति बना ली थी। डॉ. हर्षवर्धन ने जानकारी दी कि फिलहाल देश में कोरोना की वैक्सीन का तीसरे फेज का ट्रायल शुरू हो गया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि अगले दो से तीन महीनों में भारत में कोरोना की वैक्सीन लॉन्च हो सकती है। डॉ. हर्षवर्धन ने NDRF के 10बेड वाले mkeshift अस्पताल का उद्घाटन करते हुए बताया कि हमारी कोरोना वैक्सीन में से एक का ट्रायल तीसरे चरण में है। उन्होंने कहा है कि हमें हमें पूरा विश्वास है कि इस साल के अंत तक एक वैक्सीन विकसित हो जाएगी।

देश में चल रहा 3 वैक्सीनों का ट्रायल

वर्तमान में देश में तीन कोरोना वैक्सीन का ट्रायल चल रहा है।पहली वैक्सीन का नाम स्वदेशी रूप से कोवाक्सिन है, जिसे भारत बायोटेक ने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद(आइसीएमआर) के साथ सयुक्त रूप से विकसित किया है। दूसरी वैक्सीन का नाम- जाइकोव-डी है, जिसे फार्मा कंपनी जायडस कैडिला ने विकसित किया है। इसके अलावा देश में एक तीसरी वैक्सीन का ट्रायल चल रहा है जिसका नाम कोविशील्ड है। इसे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा विकसित और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया पुणे और एस्ट्राजेनेका द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित किया गया है। इसका ट्रायल फिलहाल पुणे में चल रहा है। इन तीन कोरोना वैक्सीनों का ट्रायल अलग-अलग चरणों में है। देश में फिलहाल एक वैक्सीन का ट्रायल तीसरे चरण में है।

यूपी भाजपा की नई टीम में गोरखपुर मंडल से एक भी पदाधिकारी नहीं

गोरखपुर, जेएनएन। गोरखपुर मंडल के भाजपा कार्यकताओं के लिए शनिवार का दिन अच्छा नहीं रहा। पार्टी के प्रदेश पदाधिकारियों के नामों की घोषणा हुई लेकिन गोरखपुर मंडल के सभी चार जिलों (गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर व महराजगंज) से किसी भी कार्यकर्ता को उसमें स्थान नहीं मिला। गोरखपुर से प्रदेश मंत्री की सूची में शकुंतला चैहान के नाम का उल्लेख जरूर था, पर जानकारी करने पर पता चला कि वह गोरखपुर की नहीं बल्कि मऊ जिले की कार्यकर्ता हैं और उनका गोरखपुर से कोई नाता नहीं। अगर पिछली प्रदेश कार्यकारिणी की बात करें तो उसमें गोरखपुर के स्वर्गीय उपेंद्र दत्त शुक्ल को प्रदेश उपाध्यक्ष और कामेश्वर सिंह को प्रदेश मंत्री के तौर पर जगह मिली थी। उपेंद्र शुक्ल का बीते दिनों निधन हो गया था जबकि कामेश्वर सिंह इस बार की कार्यकारिणी में स्थान नहीं पा सके। वहीं पिछली कार्यकारिणी में प्रदेश मंत्री रहे संतकबीर नगर के त्रयंबक त्रिपाठी को दूसरी बाद इसी पद के लिए मौका दिया गया है। त्रयंबक त्रिपाठी की पहचान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के तौर पर है। वह संघ के गोरखपुर जिला प्रचारक और बलिया विभाग प्रचारक का दायित्व निभा चुके हैं।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज सोमवार, 24 अगस्त, 2020

संक्षेप समाचार

संकट के समय में धैर्य कारगर औषधि के रूप में कार्य करता हैं : सिंपी शुक्ला

करमा । कोरोना संक्रमण महामारी के इस महासंकट के समय में महिलाएं अपने कौशल एवम हुनर का प्रयोग करके अवरुद्ध पड़ी परिवार की गाड़ी कों निरन्तर तीव्र गति से चला सकती हैं । दौर कितना भी बुरा क्यों न हों लेकिन व्यक्ति की सूझबूझ उक्त बुरी शक्तियों से लड़ने में काफी कारगर होती हैं उक्त बातें करमा क्षेत्र में समाज सेवा जैसे पुनीत कार्यों में निरंतर 07वर्षों सक्रिय महिला समाजसेविका श्रीमती सिंपी शुक्ला के हैं वह इस संकट के दौर में घर घर जाकर महिलाओं कों सरकार द्वारा संचालित अनेकों उपक्रमों कों अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहीं हैं उक्त कार्य में वह अपने पति पंडित रमाशंकर शुक्ला के दिशा निर्देशन में कर रही हैं ।

करंट लगने से पिता-पुत्र की मौत, मचा कोहराम

प्रयागराज। सराय ममरेज थाना क्षेत्र के पुरे लुटई गांव में रविवार सुबह पम्पिंग सेट चलाने गए पिता-पुत्र की करंट लगने से मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की।

सराय ममरेज के पूरे लुटई गांव निवासी बच्चन लाल (55 वर्ष) पुत्र स्वर्गीय जगन्नाथ खेती करके भरण-पोषण करता था। बताया जा रहा है रविवार की सुबह धान की सिंचाई करने के लिए अपनी पम्पिंग सेट चलाने के लिए बच्चन लाल अपने 30 वर्षीय बेटे अनिल कुमार के साथ गया। जहां अचानक अनिल कुमार करंट की चपेट में आ गया। यह देखते ही बेटे की जान बचाने के प्रयास में बच्चन लाल भी करंट के संपर्क में आ गया। दोनों की मौके पर मौत हो गई। जानकारी होते ही परिवार के लोग मौके पर पहुंचे और किसी तरह सप्लाई काटने के बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने पिता-पुत्र के शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। अपर पुलिस अधीक्षक गंगा पार नरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि रविवार की सुबह करंट लगने से एक किसान और उसके बेटे की जान चली गई। पुलिस शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई कर रही है।

पंचायत भवन के घटिया निर्माण पर भड़के ग्रामवासी

कोरांव। कोरांव ब्लॉक के ग्राम पंचायत छापर हरदौन में निमार्णाधीन पंचायत भवन को ग्रामीणों ने हस्तक्षेप कर निर्माण कार्य रुकवा दिया। और घटिया निर्माण कार्य व घटिया सामग्री को जनता के सामने जांच कर वीडियो भी बनाई। ग्राम छापर में प्रधान और सचिव द्वारा पंचायत भवन का निर्माण कार्य कराया जा रहा था। जिसे गांव वालों ने रोक दिया। और मनमानी निर्माण कार्य को अवरुद्ध कर दिया। कहा कि जब तक ब्लॉक के अधिकारी नहीं आते तब तक निर्माण कार्य रोके रखा जाएगा। ग्रामीणों ने तुरन्त विभागीय अधिकारियों से जांच कराकर गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य किये जाने की मांग की है।

घटिया निर्माण पर काम बंद कराते ग्रामीण

ग्रामीणों व पुलिस की बीच हुई धक्कमुक्की

सैदाबाद। संग्रामपट्टी गांव मे हुए बिवाद में बीते शनिवार की शाम मौके पर पहुची पुलिस से कुछ लोगो ने धक्का मुक्की की। पुलिस द्धारा बल प्रयोग किये जाने पर आरोपी मौके से भाग निकले।

धक्कामुक्की के बाद जुटी भीड़ व मौजूद पुलिस

बीते शनिवार की शाम दोनो पक्षो के बिवाद में मौके पर पहुची पुलिस से गांव के बब्बू पंडित, विजय पंडित, लक्ष्मीकांत, राहुल सहित एक दर्जन से अधिक लोगो ने धक्का मुक्की की व गालियां बकी। ग्रामीणो ने बताया कि बीदां गांव मे मास्क ना लगाने पर बब्बू पंडित को पुलिस ने टोका था। जिससे बब्बू पंडित पुलिसे खार खाये बैठा था। गांव के झगड़े के बीच व पुलिकर्मियो से गाली गौलाज व धक्का मुक्की करने लगा। मामले मे सैदाबाद चौकी प्रभारी अरूण कुमार मौर्या ने बताया कि कुछ अराजक तत्वो ने पुलिस से धक्का मुक्की करने का प्रयास किया था। लेकिन पुलिस ने उन्हे खदेड़ दिया। आराजक तत्वाके खिलाफ पुलिस कार्यवाही कर रही है।

भैंस के ऊपर विद्युत तार गिरने से मौत

उतरांव। थाना क्षेत्र के चकिया बरेठी गांव मे शनिवार10 बजे रात 440 वोल्ट तार गिरने से भैंस की हुई मौत हो गई। बता दें कि चकिया बरेठी गांव निवासी बृजभान सिंह जो पशुपालक हैं।तीन चार भैस रखकर दूध बेचकर अपने परिवार का भरण पोषण करता है। शनिवार रात 10 बजे बिजली के तार गिरने से भैस की मौत हो गई।एक बार फिर से बिजली विभाग की लापरवाही देखने को मिली अब तक लगभग चार दर्जन से ज्यादा मवेशियों ने इनकी लापरवाही से अपनी जान गवा चुके है इनकी लापरवाही की वजह से आए दिन यह घटनाएं होती रहती हैं। जर्जर तार को लेकर कई बार विद्युत विभाग कर्मचारियों को सूचना दिया गया लेकिन विभाग के कर्मचारी जर्जर तार को सही करने की बात तो दूर वहा देखने तक नहीं गए।पशुपालक द्वारा कर्मचारियों को लगभग आधा दर्जन से ज्यादा बार फोन से सूचित किया गया। लेकिन उनके कानो में जु तक नहीं रेंगे।यह एक बहुत बड़ी समस्या है बिजली विभाग के लिये। कर्मचारी अपनी कमियों को सुधारते नही। घटना हो जाने के बाद ये जगते है और घटना स्थल पर पहुचकर समस्या का समाधान करने में जुट जाते हैं। पशुपालक ने भैस की कीमत लगभग पचास हजार बताया। कर्मचारियों की लापरवाही के चलते इस घटना से ग्रामीणों में बिजली कर्मचारियों पर भारी आक्रोश ब्याप्त है।वही भैस के मरने से पशुपालक का रोरोकर बुरा हाल है।

भैंस के ऊपर बिजली का तार गिरने से मृत पड़ी भैंड़

मामूली विवाद में दो पक्षों में चले ईंट-पत्थर, आधा दर्जन घायल

सैदाबाद। क्षेत्र के संग्रामपट्टी गांव मे मामूली बिवाद मे दो पक्षो में जमकर ईट,पत्थर व लाठी डंडे चले जिसमे एक पक्ष के आधा दर्जन लोग घायल हो गये। पीड़ित पक्ष की तहरीर पर पुलिस ने मुकद्मा दर्ज कर आगे की कार्यवाही शुरू कर दी है। घटना बीते शनिवार शाम की है।

विवाद के बाद मौके पर तैनात पुलिस

कोतवाली हंडिया के संग्रामपट्टी गांव निवासी बिमलेश पुत्र लाल बीते शनिवार की सुबह शराब पीकर गांव में गालिया बक रहा था। शराब के नशे मे उसने गाव के शिवमंगल पटेल से कुश्ती लड़ने की चुनौती दी । दोनो मे बीच हुई कुश्ती मे विमलेश हार गया। जिसपर ग्रामीण उसका मजाक बनाने लगे। शराब के नशे में विमलेश ने सभी ग्रामीणो को गाली देना शुरू कर दिया। गांव के अमरबहादुर ने गाली बक रहे बिमलेश को रोका व घर जाने की सलाह दी जिसपर विमलेश अमरबहादुर से भिड़ गया। ग्रामीणो के बीच बचाव पर मामला किसी तरह शांत हुआ। शनिवार दोपहर दोनो पक्षो के बीच सैदाबाद चौकी मे समझौत हो गया। पीड़ित पक्ष के अमरजीत ने कोतवाली मे तहरीर देकर बताया कि मेरे भाई अमरबहादुर व बिमलेश के बीच समझौता होनो के बाद हम लोग घर मे बैठे थे। शनिवार शाम आठ बजे गांव के नितेश पुत्र जोखन, संजय पुत्र रामतीरथ, राम बाबू, श्यामबाबू, रामबहादुर, मुकेश, सतीश, प्रकाश, कल्लन सहित एक दर्जन लोग मेरे घर चढ़ आये व मां बहन की गालिया देते हुए मेरे भाई अमरबहादुर को मारने लगे। प्रार्थी ने घर मे घुसकर अपनी जान बचानी चाही तो सभी घर मे घुस गये व मेरे चचेरे भाई बबलू के उपर कुल्हाड़ी से मार दिया जिससे मेरा भाई जमीन पर गिर पड़ा। शोर गुल सुनकर दबंग मौके से भाग खड़े हुए व कुछ दूर जाकर ईट पत्थर चलाने लगे।घटना मे माया देवी, गुड़िया, महेश, राजेश, रत्नेश, अखिलेश आदि को चोटे आई। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर मुकद्मा दर्ज कर आगे की कार्यवाही शुरू कर दी है। मामले मे हंडिया क्षेत्राधिकारी ने बताया कि जांच कर आगे की कार्यवाही की जायेगी। घटना के चलते गांव मे तनाव का माहौल है। रविवार की शाम दोनो पक्ष आमने सामने हो गये थे।

काम करते समय करंट की चपेट में आने से मिस्त्री की मौत

घूरपुर। घूरपुर के पालपुर बगिया निवासी एक मिस्त्री का काम करते समय करंट की चपेट में आने से मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर परिजनों में कोहराम मच गया। पालपुर बगिया गांव निवासी नबाब उर्फ तौसीफ 23 पुत्र नईक लोहे की वेल्डिंग और कटाई का मिस्त्री है । शनिवार की शाम क्षेत्र बरामार गांव बाजार में वह लोहे की कटिंग कर रहा था कि मशीन में उतरी करंट की चपेट में आ गया। और मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर परिजनों में रोना पिटना मच गया। रविवार के अंतिम संस्कार किया गया।

टोलकर्मियों ने लगाया भाजपा नेता पर बदसलूकी का आरोप

करछना। प्रयागराज-मिजार्पुर राजमार्ग पर मुंगारी स्थित टोलप्लाजा आये दिन सुर्खियों मंग रहता है। यहां पर मारपीट आम बात हो गयी है। कभी वाहन स्वामी से टोलकर्मियों द्वारा बदसलूकी की जाती है और कभी कभी दबंग किस्म के लोग बिना टोल दिये अपने वाहनों को पास कराने के लिए टोलकर्मियों से उलझ जाते है। टोलकर्मियों का आरोप है कि मुंगारी टोल प्लाजा पर जबरन साप्ताहिक वसूली को लेकर मेजा के बीजेपी नेता श्यामराज यादव द्वारा टोलकर्मियों से मारपीट की। टोलकर्मियों की माने तो जब से टोल प्लाजा चालू हुआ है तब से श्यामलाल साप्ताहिक वसूली और रंगदारी मांग रहे है। आये दिन टोल पर सत्ता की धमक से यह के कर्मचारियों को जेल भेजने की धमकी देते है। 20 अगस्त को टोल पर पहुंचे और गाड़ियों को बिना टोल के ही जाने को कहा जब टोल कर्मियों ने इसका विरोध किया तो वे टोलकर्मियों से मारपीट भी की। जिसको लेकर टोलप्लाजा के प्रबंधक पंकज शुक्ला ने औद्योगिक थाने में शिकायती पत्र दिया है। वहीं कुछ दिन पहले टोलकर्मियों द्वारा ट्रक ड्राइवरों से जबरन अधिक टोलवसूली को लेकर मारपीट की गयी थी जिसमें ड्राइवरों ने भी थाने में टोलकर्मियों के खिलाफ शिकायत की थी।

कोटेदार की मनमानी आजिज कार्ड धारकों ने सीएम से की शिकायत

करछना। ब्लॉक करछना के ग्रामसभा देहली भगेसर में संचालित सरकारी खाद्यान्न की दुकान इन दिनों भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई है। संबंधित कोटेदार से गांव वासी त्रस्त हो गए हैं। वहीं कोटे की दुकान के सेल्समैन की ओर से कार्ड धारियों से दबंगई के साथ अभद्रता भी की जाती है। तहसील प्रशासन समेत पूर्ति विभाग से लोगों की ओर से अनेकों बार की शिकायत पर गंभीरता से अमल न किए जाने से शनिवार को मुख्यमंत्री हेल्पलाइन पर गांव के कार्डधारकों की ओर से लिखित शिकायत की गई है और जांच करके कार्यवाही करने की मांग की है। गांव के कार्डधारकों उमाशंकर यादवए महेंद्र भारतीयाए मुंशीलाल निषादए अमित पांडेयए श्याम बाबू निषादए राजेश चौधरीए कमलेश भारतीयाए छब्बू लाल निषादए सूबेदार निषादए राजेशए झल्लर हरिजनए रामनरेशए श्यामलाल आदि की ओर से की गई मुख्यमंत्री को लिखित ऑनलाइन में यह आरोपित किया गया है कि कोटेदार दबंग व असरदार किस्म का है और अपनी ऊंची पकड़ व सुविधा शुल्क के जरिए लोगों की शिकायतों पर जिम्मेदार अधिकारी शिकायत को नजरअंदाज कर देते हैं। उक्त लोगों का आरोप है कि कोटेदार प्रत्येक यूनिट पर एक किलो राशन कम देता है और गरीबों का अंगूठा लगवा कर कहा जाता है कि राशन की लिस्ट से इस बार नाम कट गया है और राशन के लिए जाने पर उन्हें अभद्रता पूर्वक घर वापस कर दिया जाता है। गौरतलब है कि ग्राम प्रधान कोटेदार फूला देवी के सगे भतीजे भी हैं । जिससे लोगों को बहुत परेशान किया जाता है और गरीब कार्डधारकों को परेशान किया जाता है जिससे लोगों में आक्रोश व्याप्त है।

महिला की गर्दन से सोने की चेन छीन बाइकसवार फरार

बरौत। हंडिया कस्बा में लक्षागह रोड के सामने जीटी रोड पर मंदिर में पूजा करने जा रही एक महिला के गर्दन से एक बाइक पर सवार दो बदमाशों ने सोने की चैन छीन कर भाग निकले। घटना शनिवार की सुबह की है । वहीं खुलेआम इस छिनैती को लेकर चर्चा का विषय बना हुआ है। बताया जाता है कि लक्ष्मी पत्नी राजकुमार निवासी वार्ड नंबर 12 कस्बा हड़िया शुक्रवार को तीज ब्रत होने से शनिवार को सुबह घर से लक्षागह रोड पर स्थित मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए जा रही थी। जैसे ही वह लक्षागह रोड के पास पहुंची ही थी कि पहले से एक बाइक पर सवार दो बदमाश खड़े थे। गर्दन में पहने सोने की जंजीर पर झपट्टा मारकर जंजीर लेकर भाग निकले। स्थानीय लोगों ने सुचना थाने में दी।

महिला के साथ युवक ने की अश्लील हरकतें मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। घर से सामान लेने जा रही महिला को रास्ते में एक युवक पकड़ कर अश्लील हरकतें करने लगा । शोर मचाने पर जान से मारने की धमकी देकर भाग गया।पुलिस ने महिला की तहरीर पर युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सरायख्वाजा निवासनीय एक महिला का आरोप है कि वह सामान लेने गांव के ही एक महिला के घर जा रही थी। आरोप है कि गली में सुनसान देख कर एक युवक उसे पकड़ लिया और अश्लील हरकतें करने लगा । शोर मचाने पर जान से मारने की धमकी देकर भाग गया । पीडित महिला ने मऊआइमा थाने में मनबोध उर्फ बुझई पुत्र चिखुरी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है। पुलिस आरोपी की तलाश में लगी हुई है ।

इलाके में यूरिया की कालाबाजारी चरम पर, अफसरों ने साधी चुप्पी

शंकरगढ़। शंकरगढ़ क्षेत्र के साथ समूचे यमुनापार में यूरिया के लिए किसान परेशान है। सहकारी समितियों से यूरिया न मिलने से परेशान किसानों को अपनी फसल बचाने के लिए निजी दुकानों से महंगे दामों में यूरिया खरीदनी पड़ रही है।किसान यूरिया के लिए सहकारी समितियों के बाहर घंटों लाइन लगा रहे हैं।

कई दिन चक्कर लगाने के बाद रविवार को नारीबारी के भारत नगर व नारीबारी सहकारी समिति से कुछ किसानों को दो बोरी खाद की लिमिट निर्धारित कर सूची लगाकर दी गई, जिससे किसानों में आक्रोश दिखाई दिया। ऐसे में परेशान किसान कहीं हंगामा कर रहे हैं, तो कहीं मारामारी की नौबत आ गई है। नारीबारी खीरी रोड के साथ ही अन्य निजी व्यापारियों, दुकानदारों द्वारा यूरिया की किल्लत से जूझ रहे किसानों के जेब में डाका डाला जा रहा है। किसान मनोज कुमार द्विवेदी सहित अन्य किसानों ने खुलेआम चिल्लाकर दुकानदारों का नाम लेकर 50 से 100 रुपये तक महंगी खाद बेचने का आरोप लगाकर अधिकारियों की मिलीभगत बता रहे है।

यूरिया के लिए सहकारी समिति के बाहर किसानों की लगी भीड़

वहीं जिले के आला अधिकारी बाहर निकल कर जांच करने व कार्यवाही करने से क्यों कतराते हैं? यह भी एक बहुत बडा प्रश्न चिन्ह है। कालाबाजारी करने वाले दुकानदारों की जांच कर ऐसे लोगों के लाइसेंस क्यों नहीं निरस्त किए जा रहे। इन समस्याओं से जूझते किसान सरकारों को कोसते दिखाई देते हैं। एक तो इस क्षेत्र में प्रकृति की मार दूसरी व्यापारियों द्वारा अन्नदाताओं से लूट से किसान त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। प्रशासन से ग्रामीण किसानों ने गुहार लगाई की समितियों के माध्यम से किसानों को भरपूर खाद की व्यवस्था सुनिश्चित की जाय और कालाबाजारी करने वाले दुकानदारों के ऊपर कार्रवाई की जाय अन्यथा अन्नदाता को मजबूरी में आन्दोलन के लिए बाध्य होना पड़ेगा जिसकी समस्त जवाबदेही प्रशासन की होगी।

समाजसेवी 'कोरोना योद्धा सम्मान' से हुए सम्मानित

प्रयागराज। लोकसेवक मण्डल एवं स्व.काशीनाथ ग्राम विकास शोध एवं पुनर्वास संस्थान द्वारा राजर्षि टंडन सेवा केन्द्र बैंक रोड प्रयागराज में कोविड 19 वैश्विक महामारी में लॉकडाउन के दौरान राशन, लाई, चना, गुड़, मास्क, सेनेटाइजर का लगातार वितरण करने वाले लोकसेवक मण्डल, अनाम स्नेह, सामाजिक एकता परिषद के कार्यकताओं और सहयोगी जनों का सम्मान समारोह रविवार को हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए लोकसेवक मण्डल के अध्यक्ष राजकुमार चोपड़ा ने कहा कि लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लोकसेवक मंडल पूरे भारत मे संचालित है। जिसका उद्देश्य सिर्फ शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना है। उन्होंने वरिष्ठ समाजसेवियों एवं कार्यकताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज सेवा एक दिन की नहीं अपितु सतत चलने वाली प्रक्रिया है, इसको करते रहना चाहिए। समाजसेविका डॉ. अर्चना सिंह ने कार्यक्रम के संयोजक वरिष्ठ समाजसेवी शिक्षक श्रीनारायण यादव और उनकी पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि आप सब जिस तत्परता से लॉकडाउन के दौरान समाजसेवा किया, यह सम्मान अपने आप सम्मानित हो रहा है।

अपर स्थाई अधिवक्ता श्रीमती सुभाष राठी ने सभी को बधाई दिया और कहा कि विपरीत परिस्थितियों में इस महामारी में समाज सेवा करने वाले युवाओं और दान दाताओं को जो सम्मानित किया जा रहा है वह एक नेक व पुनीत और प्रेरणा दायक है। स्व. काशीप्रसाद ग्राम विकास शोध एवं पुनर्वास संस्थान की सचिव डॉ अर्चना सिंह एवं राजकुमार चोपड़ा ने लायंस क्लब के चेयरमैन अजय मेहरोत्रा सहित साठ समाज सेवियों को बुके, अंगवस्त्रम् और प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ समाजसेवी शिक्षाविद लोकसेवक मंडल के कोषाध्यक्ष बह्मप्रकाश ने तथा संचालन सामाजिक एकता परिषद के अध्यक्ष ओमप्रकाश शुक्ल ने किया। इस अवसर पर सम्मानित होने वालों में डॉ. वीना सिंह, कर्मचारी नेता रविशंकर मिश्र, डॉ. चंद्रशेखर यादव, मंजू पाठक, पूर्व पार्षद शिवसेवक सिंह, पूर्व पार्षद उमेश चंद यादव, प्रेमलता शुक्ला, वरिष्ठ पार्षद कमलेश, रश्मि पोद्दार, कुसुम मिश्रा, मधू यादव, डॉ. यशवंत पाल, विज्ञान फाउंडेशन की सचिव अनुराधा, समाज सेवी घनश्याम मास्टर, दिव्यांग मोर्चा के अध्यक्ष लवलेश सिंह आदि रहे।

समाजसेवी को सम्मानित करते हुए

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

कोरोना से निपटने के लिए प्रयागराज में तैयार होंगे 21 लेवल-1 अस्पताल

प्रयागराज। वैश्विक महामारी के बढ़ते प्रभाव से चिंतित प्रयागराज जिला प्रशासन ने 21 नए लेवल (एल)-1 कोविड सेंटर बनाने का प्रस्ताव तैयार किया है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि जलाधिकारी भनु चंद्र गोस्वामी के निर्देश पर 21 नए एल-1 अस्पतालों में 4100 मरीजों को भर्ती कर उपचार करने की सुविधा उपलब्ध होगी। वर्तमान में जिले में कुल आठ अस्पतालों में कोरोना मरीजों का उपचार किया जा रहा है। इन अस्पतालों में कुल 710 बेड़ की व्यवस्था की गई है। अगली स्थिति के लिए नए अस्पतालों का प्रस्ताव तैयार किया गया है। उन्होने बताया कि जिले में कुल 31 सैम्पल कलेक्शन सेंटर बनाए गए हैं, जिसमें शहर के अंदर 11 स्थानों पर और सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर भी परीक्षण की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। प्रतिदिन करीब 2500-3000 लोगों की सैम्पलिंग कराई जा रही है। कुल 700-800 आरटीपीसीआर और 2200 से 2400 एंटीजन टेस्ट किए जा रहे हैं। तीन स्थानों पर ट्रूनॉट मशीन लगाई गई है।

भाई की हत्या कर, छोटे भाई ने की आत्महत्या

मृतक के परिजनों से पूंछताछ करती पुलिस

रोते बिलखते परिजन

प्रयागराज। धूमनगंज थाना क्षेत्र के मन्थरवा गांव के बाहर रविवार की सुबह दो सगे भाइयों का शव पाया गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। पुलिस कहना है कि भाई की हत्या कर छोटे भाई ने ट्रेन से कटकर आत्महत्या की है।

धूमनगंज के मन्थरवा गांव निवासी जितेन्द्र कुमार (28) पुत्र रमेश ई-रिक्शा चलाकर अपना खर्च चलाता था। बताया जा रहा कि शनिवार की रात शराब पीने के बाद जितेन्द्र और छोटे भाई छोटू (25) से विवाद हो गया। विवाद के दौरान छोटू ने बड़े भाई जितेन्द्र के सिर में वार कर दिया। जिससे वह घायल हो गया। मामला शांत होने के बाद जितेन्द्र सिर में गमछा बांधकर घर से चला गया। रविवार की भोर छोटू घर से उसे खोजने के लिए निकला तो बड़े भाई को मृत पाया। वहां से घर पहुंचा और अपने पिता को बताया कि जितेन्द्र की मौत हो गई। यह जानकारी देने के बाद जितेन्द्र घर से निकला और ट्रेन के आगे कूद कर अत्महत्या कर ली। यह जानकारी होते ही परिवार के सदस्य बदहवास हालत में मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही धूमनगंज थाना प्रभारी एवं क्षेत्राधिकारी द्वितीय पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और वारदात की खबर आलाधिकारियों को दी। सूचना पर अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह समेत अन्य अधिकारी पहुंचे और दोनों का शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि मृतकों के पिता का कहना है शनिवार की रात दोनों भाई शराब के नशे में मारपीट की थी। इस दौरान एक के सिर में ईंट से गम्भीर चोंट लग गई तो वह चला गया। रविवार की सुबह छोटे ने बड़े भाई को मृत देखा तो ट्रेन से कटकर आत्महत्या कर ली। दोनों के शव कब्जे में लेकर जांच की जा रही है।

करोड़ों के घोटाले मामले में स्कूल प्रबन्धक समेत तीन के खिलाफ मुकदमा

प्रयागराज। करोड़ों के घोटाला मामले को लेकर औद्योगिक थाने में सेन्टजान्स एकेडमी स्कूल प्रबन्धक सी.वी.इनिश समेत तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज करके मामले की जांच शुरू कर दी है।

औद्योगिक क्षेत्र के स्टेट म्योहरा मीरजापुर रोड निवासी शिल्पी मिचेल पत्नी स्वर्गीय मिचेल इनिश ने 20अगस्त को थाने में तहरीर देकर आरोप लगाया कि सोसायइटी पार द प्रमोशन आप दि एजुकेशन एंडवन्यर स्पोर्ट्स , एण्ड कर्न्सवेशन आप इनवायरमेंट,फेयरीडेल स्टेट व्यौहरा औद्योगिक के अध्यक्ष सी.वी.इनिश, सचिव मिशेल सिंह और कोषाध्यक्ष डोरिन्ड इनिश ने कूट रचित दस्तावेज तैयार करके फर्जी तरीके से वेतन एवं अन्य मदों के नाम से घोटाला कर रहे हैं। संस्था में एक नामचीन क्रिकेटर के नाम से एक और संस्था चलाकर करोड़ों का घोटाला कर रहे हैं।

पीड़ित महिला ने आरोप लगाया है कि उसके पति के निधन होने के बाद से लगातार फजीर्वाड़ा करके अपने चहेते को मोटी रकम दे रहे हैं। तहरीर में महिला ने बताया कि उक्त प्रकरण की जांच सिविल लाइंस में स्थित सहायक रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटी एवं चिट्स के द्वारा निष्पक्ष एवं स्वतंत्र संस्था मनीधर एण्ड कम्पनी ने जांच करके 13 जुलाई को 22 पेज की रिपोर्ट प्रस्तुत किया। पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। अपर पुलिस अधीक्षक चक्रेश मिश्रा ने बताया कि सेन्ट जान्स एकेडमी के प्रबन्धन तन्त्र से जुड़े मामला संज्ञान में आया है। जिस पर जांच के उपरान्त दोशी पाये जाने पर कार्यवाही की जायेगी।

दबंगों ने महिला को पीटा, शिकायत

करछना। थाना क्षेत्र के खुजरी गांव में शनिवार रात लगभग 8 बजे कुछ दंबगों ने एक महिला व उसके परिजनों की जमकर पिटाई कर दी। गांव निवासी रामरती पत्नी राम सिंह बाहर अपने घर बैठी थी कि तभी गांव के ही रोहित, धर्मेन्द्र, राकेश, मोती लाल व कुछ अज्ञात लोग आ गये और किसी पुराने विवाद को लेकर गाली गलौज देने लगे जब महिला ने इसका विरोध किया तो उक्त लोग लाठी डंडे आदि से महिला की जमकर पिटाई कर दिये बीच बचाव कराने आये परिजनों की भी पिटाई कर दी। जिससे महिला को गंभीर चोट आयी है। महिला ने थाना करछना में तहरीर देकर दोषियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है।

दो जगह कोरोना जांच में विरोधाभासी रिपोर्ट ने जांच प्रक्रिया पर उठाये सवाल

प्रयागराज। कोरोना जांच रिपोर्ट की मनमानी की आंच इलाहाबाद हाईकोर्ट के कर्मचारियों, अधिकारियों को भी झुलसाने लगी है। इसकी जद में हाईकोर्ट के कई अधिकारी भी आ गये हैं। महानिबंधक अजय कुमार श्रीवास्तव ने सभी स्टाफ को राजापुर स्थित कैम्प में कोरोना जांच कराने का आदेश दिया है। कैम्प में भीड से बचने के लिए कुछ अधिकारियों ने धूमनगंज जांच केन्द्र पर जांच करायी।लोगो ने कहा स्टाफ के लिए हाईकोर्ट के कैम्प में जांच कराना जरूरी है। तो इन्होंने राजापुर कैम्प मे भी जांच करा ली।जब रिपोर्ट आयी तो धूमनगंज ने पाजिटिव बता दिया और राजापुर कैम्प की रिपोर्ट निगेटिव आ गयी।

अनुभाग अधिकारी योगेन्द्र कुमार सिंह के घर उन्हे आइसोलेट करने पुलिस पहुच गयी ।सिंह ने निगेटिव रिपोर्ट दिखायी और कहा उन्हें कोरोना के लक्षण भी नही है।पुलिस ने इसकी सूचना उच्चाधिकारियों को दी है। ऐसी ही स्थिति समीक्षा अधिकारी दीपक कुमार व रवीन्द्र कुमार की भी है।इनके पास एक ही दिन मे आधे घंटे मे ली गयी पाजिटिव व निगेटिव दोनो ही रिपोर्ट है।ऐसे अन्य कई कर्मचारी है जिन्हें परेशानी झेलनी पड़ी है। इसी तरह से बार एसोसिएशन के महासचिव प्रभाशंकर मिश्र को पाजिटिव बताया गया। उन्होंने गुड़गांव की प्रयागराज स्थित एजेन्सी से जांच करायी तो निगेटिव पाये गये।

वकीलों ने भी जांच पर सवाल उठाया है। हाईकोर्ट के स्टाफ ने अपनी शिकायत उप निबंधक के मार्फत महानिबंधक से की है।उन्होंने उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है। निबंधक शिष्टाचार आशीष कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि जब दो रिपोर्ट विरोधाभाषी है तो तीसरी जांच करायी जानी चाहिए। शिकायत मिलने पर कार्रवाई की जायेगी। पूर्व महासचिव जे बी सिंह का कहना है कि कोरोना रिपोर्ट आते ही परिवार की शहर से अलग थलग कैदी जैसी हालत कर दी जाती है। गलत रिपोर्ट पर लोगो के जीवन के अधिकार से खिलवाड़ किया जा रहा है। जाच मे अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है।

हाईकोर्ट कर्मचारी अधिकारी संघ के महासचिव बृजेश शुक्ल ने कहा है कि जो भी व्यक्ति करोना संक्रमण की जांच कराने जाता है उसके व्यक्तिगत विवरण के साथ व्हाट्स एप नम्बर भी दर्ज करते हैं। व्हाट्स एप पर रिपोर्ट उपलब्ध कराने की पारदर्शिता नहीं है। जगह पाजिटिव और वही व्यक्ति दूसरी जांच मे निगेटिव पाया जा रहा है ।परन्तु रिपोर्ट कहीं पर भी प्राप्त नही करायी जा रही है। पाजिटिव रिपोर्ट पर मात्र फोन से सूचना देकर आइसोलेशन की सलाह दी जा रही है। वही निगेटिव आने पर न तो सूचना और न ही रिपोर्ट। परिणामस्वरूप सब कुछ अंधकारमय और प्रशासन की कृपा पर निर्भर है।

संघ द्वारा प्रशासन से यह मांग की जाती है कि प्रत्येक व्यक्ति को जांच रिपोर्ट अवश्य उपलब्ध करायी जाय। यह प्रकरण संघ मुख्य न्यायधीश के संज्ञान में लाकर उचित कार्यवाही की मांग करेगा। उच्च न्यायालय प्रशासन कर्मचारियों से करोना जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश निर्गत कर चुका है और प्रयागराज प्रशासन द्वारा रिपोर्ट न दिये जाने से आदेश का अनुपालन सम्भव नही हो रहा है।जिसकी शिकायत की जायेगी।और जांच में सावधानी बरतने की मांग की जायेगी।

हाईकोर्ट बार के पूर्व उपाध्यक्ष की चीफ जस्टिस से अपील

प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के 11 बार उपाध्यक्ष रहे अधिवक्ता एस.के गर्ग ने मुख्य न्यायाधीश से आग्रह किया है कि सीएमओ एवं प्राचार्य मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के नेतृत्व में हर शनिवार, रविवार को हाईकोर्ट क्रिकेट मैदान में कैम्प लगवाया जाय और हाईकोर्ट के अधिवक्ताओं, स्टाफ व मुन्शियों की कोरोना जांच करायी जाय।

गर्ग ने बार काउन्सिल, ट्रस्टी कमेटी व हाईकोर्ट बार एसोसिएशन से अनुरोध किया है कि कोरोना काल में जरूरतमंद वकीलों के साथ मुन्शियों की आर्थिक सहायता देने की पहल करें। अधिवक्ता की तरह मुन्शी भी हाईकोर्ट के अभिन्न अंग हैं। गर्ग ने महाधिवक्ता से अनुरोध किया है कि वह जरूरतमंद वकीलों, मुन्शियों की आर्थिक सहायता देने के लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजे और अमल में लाने का प्रयास करें।

गर्ग ने सरकारी वकीलों की फीस मे गयी विभेदकारी कटौती को राज्य सरकार से वापस लेने की मांग की है और कहा है कि जब कोई भी विधायक, मंत्री व सरकारी अधिकारी अपने वेतन से कटौती नहीं करा रहा है तो केवल सरकारी वकीलों की फीस की कटौती करना सरकार व नौकरशाही की ज्यादती है। गर्ग ने केन्द्र सरकार के कानून मंत्री से भी अनुरोध किया है कि केन्द्र सरकार के विभागों द्वारा मंत्रालय से निर्धारित वकीलों की फीस में अनावश्यक कटौती बंद करने का आदेश जारी करें।

सम्पत्ति क्षति दावा अधिकरण के खिलाफ हाईकोर्ट बार ने लिया आन्दोलन का निर्णय

प्रयागराज। दावा अधिकरण विधेयक पारित होने के विरोध में हाइकोर्ट बार एसोसिएशन ने आंदोलन करने का निर्णय लिया है। रविवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हुए बार कार्यकारणी की बैठक ने निर्णय लिया गया कि प्रयागराज की जनता के सहयोग से इस मामले में सड़क पर लड़ाई लड़ी जाएगी। एसोसिएशन के महासचिव प्रभाशंकर मिश्र ने बताया कि अधिकरण मामले की स्थिति से मुख्यमंत्री, राज्यपाल, विधि मंत्री और विधि सचिव सहित अन्य संबंधित लोगो के अलावा प्रयागराज के जनप्रतिनिधियो को अपने विरोध से पहले ही अवगत करा दिया गया था। विधेयक पारित होने से हाइकोर्ट के वकीलो में नाराजगी है। अवगत कराया जाएगा। विधेयक अलोकतांत्रिक है। बार एसोसिएशन का यह भी मानना है कि अधिकरण कभी भी अपनी उपयोगिता साबित नहीं कर सके हैं बैठक की अध्यक्षता अमरेंद्र नाथ सिंह ने और संचालन प्रभाशंकर मिश्र ने किया।

तेजी से बढ़ रहा बाढ़ का पानी

प्रयागराज। प्रयागराज में गंगा-यमुना का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। पानी धीरे-धीरे बांध स्थित ऐतिहासिक लेटे हनुमान जी के मंदिर की ओर बढ़ने लगा है। जिस तेजी से पानी बढ़ रहा है, उससे यही अनुमान लगाया जा रहा है कि जल्द ही गंगा बंधवा स्थित हनुमान जी को शीघ्र ही स्नान कराएंगी। हालांकि, गंगा का पानी अभी मंदिर से करीब दूर हैं। मंदिर के सामने स्थित पार्क के दूसरे छोर पर लगी दुकानों को हटवा दिया गया है। वहीं, बोट क्लब और मनकामेश्वर मंदिर की सीढि?ं तक यमुना का पानी पहुंच गया है।

गंगा-यमुना के जलस्तर में बढ़ोतरी जारी है। पिछले 24 घंटे के भीतर नैनी, छतनाग में करीब आठ और फाफामऊ में 15 सेंटीमीटर जलस्तर में वृद्धि दर्ज की गई है। सिंचाई विभाग बाढ़ प्रखंड के अधिकारियों के मुताबिक रविवार को नैनी में 77.33, छतनाग में 76.79 और फाफामऊ में 79.28 मीटर जलस्तर दर्ज किया गया। वहीं शुक्रवार से शनिवार तक 24 घंटे में दोनों नदियों में जल की बढ़ोतरी हो रही थी। नैनी, छतनाग में करीब 25 और फाफामऊ में 13 सेंटीमीटर पानी बढ़ा था।

गंगा-यमुना का जलस्तर के लगातार बढ़ने के कारण बंधवा स्थित लेटे हनुमान मंदिर की तरफ पानी बढ? लगा है। सुरक्षा के मद्देनजर हरिहर आरती समिति के बने मंच के पास लगी सभी दुकानों को हटवा दिया गया है। ड्रूषसचाई विभाग बाढ़ प्रखंड के अधिशासी अभियंता ब्रजेश कुमार ने बताया कि गंगा-यमुना का जलस्तर बढ़ रहा है। इसलिए बाढ़ प्रभावित इलाकों में बचाव के इंतजाम किए जा रहे हैं। वहीं बाढ़ राहत दल पीएसी के प्रभारी विलास यादव ने अपनी टीम के साथ सरस्वती घाट, बलुआघाट, ककरहा घाट समेत कई जगह निरीक्षण किया।

उत्तराखंड में हो रही बारिश के कारण नरौरा से प्रतिदिन पानी छोड़ा जा रहा है, जो कानपुर बैराज पहुंचता है। यहां से दो लाख क्यूसेक से अधिक पानी हर दिन छोड़ा जा रहा है, जिस कारण गंगा का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। वहीं, मप्र और राजस्थान में हो रही बरसात के कारण यमुना के जलस्तर में वृद्धि हो रही है।

पटरी फुटपाथ व्यापारी वैदिक परम्परा का हिस्सा: पर्यटन मंत्री

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना का लाभ प्रदेश के हर पात्र तक पहुंचना लक्ष्य

वर्चुअल मीटिंग करते पर्यटन मंत्री

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री डॉ. नीलकंठ तिवारी ने उत्तर प्रदेश के समस्त जनपदों के फुटपाथ पथ विक्रेताओं के पदाधिकारियों को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत वर्चुअल माध्यम से वार्ता किया। कहा कि प्रदेश के समस्त जिलों में ठेला, फेरी पटरी व्यवसायी व सभी पथ विक्रेताओं को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना का लाभ मिले। क्योंकि ये व्यापारी वैदिक परम्परा का हिस्सा हैं। डॉ. तिवारी ने कहा यह देश के इतिहास में पहली बार हुआ है कि फेरी, पटरी ठेला व्यवसायी को लघु व्यापारी की श्रेणी में रखते हुए उनके लिए विशेष पैकेज बनाकर, राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया गया है। उन्होंने बताया कि इस तरह के व्यापार का जिक्र पौराणिक काल में भी किया गया है। आत्मनिर्भर भारत अभियान का जिक्र करते हुए बताया कि इस अभियान की प्रथम कड़ी फेरी-पटरी व्यापारियों से शुरू होती है। जिस सम्पूर्ण लॉकडाउन के दौरान फेरी-पटरी विक्रेताओं द्वारा स्वदेशी उत्पादनों का क्रय प्रधानमंत्री मोदी के वोकल टू लोकल अभियान का स्वरुप है, इस कार्य हेतु उन्होंने सभी पटरी फुटपाथ व्यापारियों का आभार जताया। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इस योजना का लाभ अधिक से अधिक पात्र जनों तक पहुचाने में मदद करें। मोदी सरकार व योगी सरकार इन व्यापारियों के उद्धार के लिए निरंतर कार्य कर रही। ह्रसाथी हाथ बढ़ाना के भावह्व को जागृत करते हुए डॉ. तिवारी ने समस्त व्यापारियों को आत्मनिर्भर भारत अभियान को और सशक्त करने का आग्रह किया। पर्यटन मंत्री ने प्रयागराज, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर जिलों में कोरोना महामारी के नाम पर पुलिस नगर निगम प्रशासन द्वारा उत्पीड़न के सन्दर्भ में मुख्यमंत्री से वार्ता कर पूरी जानकारी से अवगत कराने का आष्वासन दिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से वाराणसी से अभिषेक निगम, राजेन्द्र प्रसाद सिंह लखनऊ, प्रयागराज से डॉ. प्रमोद शुक्ला, रवि शंकर द्विवेदी, विमल गुप्ता, डॉ. ममता द्विवेदी, कानपुर से आभा चतुवेर्दी, छोटेलाल, सत्य, नारायण, मनीष गुप्ता, बसन्त गुप्ता, आकाश सोनकर, मिजार्पुर से रचना गुप्ता, बलिया से आकाश पटेल, विकास पाण्डेय, संतोष गुप्ता, प्रदीप अग्रवाल, गोपाल सिदुरिया, बरेली से विनय कुमार अग्रवाल गाजीपुर से डॉ. शम्मी सिंह, सन्नी अली, बृजेश सिंह पटेल, हापुड़ आनंद प्रकाश, ओम प्रकाश, जौनपुर से अश्वनी गुप्ता तथा अन्य कई जिलों के पदाधिकारीगण ने वर्चुवल संवाद में अपने जिले की समस्या से अवगत कराया।

नई शिक्षा नीति सफल करने में सबसे बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की: प्रो दिनेश

नई शिक्षा नीति पर वर्चुअल सम्मेलन

प्रयागराज। आक्टा और संज्ञार्थम शोध संस्थान की ओर से राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के समापन सत्र में दिल्ली विष्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. दिनेश सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति में बहुत ऐसे प्रावधान किए गए हैं जो काफी प्रोग्रेसिव हैं। लेकिन इसके लिए शिक्षा से जुड़े सभी लोगों को अपने स्वधर्म का निर्वहन करना होगा। इस नीति को सफल करने में सबसे बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की है।

हिन्दी विष्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो. गिरीष्वर मिश्रा ने कहा कि नई शिक्षा नीति में प्रतिभा और शैक्षिक का ध्यान रखा गया है। अलग अलग क्षेत्रों में प्रतिभा के प्रस्फुटन की संभावनाएं भी बढ़ी हैं। गुवाहाटी विष्वविद्यालय की प्रो. नीलिमा भागवती ने कहा कि प्रत्येक छात्र की क्षमता अनुसार नई नीति में शिक्षा देने का प्रयास किया गया है, जिससे बच्चे की छुपी प्रतिभा बाहर आये। संयुक्त राष्ट्र संघ से अमित सिंघल ने कहा कि इस शिक्षा नीति में महिलाओं और पिछड़े और उपेक्षित वर्गों की शिक्षा के लिए जो प्रावधान किए गए हैं वह बेहद दूरदर्शी हैं और उसमें संयुक्त राष्ट्र संघ के संपोषणीय विकास लक्ष्य का भी ध्यान रखा गया है।

गुजरात केंद्रीय विष्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राम शंकर दुबे ने कहा नई शिक्षा नीति भारत की आत्मा को प्रदर्शित करती हैं। विगत 136 वर्षों बाद कोई एक ऐसा डॉक्यूमेंट आया जो भारत को उसके गौरवशाली अतीत की ओर ले जा सकता है। सऊदी अरब, जेद्दा से प्रो. समी खान ने कहा कि शिक्षा नीति में कई ऐसे महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं जो 2030 तक भारत की तस्वीर बदल सकते हैं। लेकिन फिर भी शिक्षा का निजीकरण भारत जैसे देश के लिए एक गलत कदम होगा। वोकेसनल एजुकेशन को बढ़ावा और शोध पर ध्यान देना एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है। विष्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य डॉ. किरण हजारिका ने उच्च शिक्षा के नियामक तंत्र में रूपांतरण और शिक्षा में गुणवत्ता पूर्ण रिसर्च के प्रावधानों पर प्रकाश डाला। शिक्षा मंत्रालय में पूर्व सचिव डॉ. अरुण कुमार रथ ने कहा कि नई शिक्षा नीति छात्र केंद्रित है। मेरी लैंड अमेरिका से प्रो. अतुल राय ने ऑनलाइन लर्निंग पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह भारत जैसे देश में भी क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। उत्तर प्रदेश में बेसिक शिक्षा के निदेशक डॉ. सर्वेंद्र विक्रम सिंह ने कहा नई शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा में परिवर्तन के लिए जो प्रावधान किए गए हैं वह क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगा।

वेबीनार का संचालन वेबीनार के संयोजक और आक्टा महासचिव डॉ.उमेश प्रताप सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ.मंजरी शुक्ला और ऑक्टा अध्यक्ष डॉ. एसपी सिंह ने किया। अतिथियों का परिचय डॉ.अर्चना पाल, डॉ.अमिता पांडे, डॉ.गौरव गोविंद, डॉ.प्रेम प्रकाश सिंह, डॉ. केएन सिंह, डॉ.मुदिता, डॉ.नमिता साहू, डॉ.संतोष कुमार श्रीवास्तव ने किया। वेबीनार में डॉ.दर्शन झा और डॉ.शक्ति शर्मा ने भी अपने विचार रखे।

विश्वविद्यालय के हॉस्टल खोले जाने की मांग पर अड़े छात्र

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रावासों में प्रवेश दिए जाने की मांग ने आंदोलन का रूप ले लिया है। हॉस्टल खोले जाने की मांग पर छात्र अड़े हैं। धरना दे रहे हैं और एकमत हैं कि जब तक छात्रावास में प्रवेश को मंजूरी नहीं मिलती उनका आंदोलन जारी रहेगा। हालांकि उन्हें समझाने के लिए यूनिवर्सिटी प्रशासन ने पहल की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

इसी मांग को लेकर छात्र डीएसडब्ल्यू कार्यालय के समक्ष धरने पर बैठे रहे। छात्रों ने मांग की कि जब तक छात्रावास में प्रवेश की मंजूरी नहीं मिलेगी तब तक धरना जारी रहेगा। डीएसडब्ल्यू प्रो. केपी सिंह और चीफ प्रॉक्टर प्रो. आरके उपाध्याय ने प्रदर्शनकारी छात्रों को समझाने का प्रयास किया लेकिन छात्र अपनी जिद पर अड़े रहे। सत्यम कुशवाहा ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन छात्र-छात्राओं को परेशान करने के बजाय अपनी जिम्मेदारी को निभाए। बता दें कि गुरुवार को कुछ छात्र पीसीबी हॉस्टल में आए लेकिन इविवि प्रशासन की ओर से उन्हें हॉस्टल में प्रवेश नहीं दिया गया। इससे आक्रोशित छात्र हॉस्टल के सामने धरने पर बैठ गए। जब इविवि प्रशासन की ओर से आंदोलनकारी छात्रों से वार्ता करने कोई नहीं आया तो, आक्रोशित छात्रों ने शुक्रवार को डीएसडब्ल्यू कार्यालय पर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया। चीफ ने प्रॉक्टर काफी समझाने का प्रयास किया लेकिन छात्र अपनी जिद पर अड़े रहे।

अखण्ड भारत सन्देश

प्रयागराज सोमवार, 24 अगस्त, 2020

क्रियायोग सन्देश

Kriyayoga - Practice Science of Dharma

When we understand the creations to establish work- "Dharma", the 24 elements have proven time and again word "Dharma" on the plat- shop of creation - Brahma which are constituents of our that the practice of Kriyayoga form of Kriyayoga, we will realize that the aim of "Dharma" is to establish Unity.

Dharma is comprised of the following: "dhri" (धृ) , and "m" (म). "dhri " means idea of holding, and " m" gives idea of change in existence of activity, preservation - Vishnu activity and chane- Shiva activity. In the true practice of "Dharma", one experiences that one's existence is the unique form of visible and invisible powers of Brahma, Vishnu and Shiva.

Because of the power of existence have united togeth- er to become our unique visi- ble form. When the power of unity amongst the 24 ele- ments decreases, then our visible form begins to disap- pear.

Realized Masters, saints and sages, rishis and munis is the royal and highest prac- tice of Dharma. The practi- tioners of Kriyayoga are those who are able to imple- ment the philosophy of **EKOHAM BAHUSHYAMI** (एकोहंबाहुश्याम) – One Power (God) Has Become All , in the world.

धर्म विज्ञान का अभ्यास

धर्म शब्द ही क्रियायोगिक व्याख्या करने पर स्पष्ट होता है कि धर्म एकता स्थापित करने की वैज्ञानिक क्रिया है। धर्म शब्द ह्यधृह्य और ह्यमह्य अक्षरों से मिलकर बना है, ह्यधृह्य का अभिप्राय धारण करने से है, ह्यमह्य का अभिप्राय सृजन, संरक्षण एवं परिवर्तन की कार्यशाला से है जिसे ब्रह्मा, विष्णु और शिव की कार्यशाला कहते है। धर्म के अभ्यास में व्यक्ति को अनुभव होता है कि उसका अस्तित्व दृश्य और अदृश्य शक्ति का संयुक्त रूप है, जिससे ब्रह्मा, विष्णु और शिव शक्ति का अलौकिक रूप भी कहते हैं।

धर्म शक्ति की वजह से ही 24 तत्व संयुक्त होकर मानव के दृश्य रूप को प्रकट करते हैं। जब 24 तत्वों के बीच में एकता की शक्ति कम होने लगती है तब धीरे - धीरे शरीर अदृश्य होने लगती है। आत्मज्ञानी ऋषि, मुनियों ने सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग का अभ्यास धर्म का श्रेष्ठतम अभ्यास है। क्रियायोग करने वाले व्यक्ति राष्ट्र में बहुआयामी समृद्धि स्थापित करने में सक्षम होते हैं।